1	परियोजना का शीर्षक	'बनारस के परम्परागत पेशों की शब्दावली का संकलन एवं अध्ययन'
2	परियोजना की अवधि	एक वर्ष
3	कुल लागत	
4	पी.आई. का नाम, पता फोन नंबर और ई मेल	**प्रधान अनुसंधान कर्त्ता** डॉ0 प्रभाकर सिंह प्रोफेसर, भौतिकी विभाग भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी– 221005) Mob. No. 9451002283 Ph.No. 0542-6701916 Email : psingh.app@iitbhu.ac.in Psingh.app@gmail.com
5	को. पी.आई. का नाम, पता फोन नंबर और ई मेल	**सह अनुसंधान कर्त्ता** प्रो0 सदानन्द शाही समन्वयक भोजपुरी अध्ययन केन्द्र, कला संकाय बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी – 221005 Mob. No. 09450091420 Ph.No. 0542-6703020 Email : sadanandshahi@gmail.com bhojpuri.ak.bhu@gmail.com

5. परियोजना का विवरण–

बनारस एक अनूठा शहर है। इस शहर में रहने वाली आबादी तरह–तरह के पेशों से अपनी आजीविका चलाती है। बनारस गंगा के तट पर बसा है। बनारस के घाट जाने कब से समूची दुनिया के आकर्षण का केन्द्र बने हुए हैं और जाने कब से बनारस में नौकायन होता रहा है। और जाने कब से मल्लाहों/नाविकों की आजीविका चलती रही है। इसी तरह गंगा स्नान श्राद्ध कर्म आदि से जुड़े तरह–तरह के पेशे गंगा तट पर विकसित हैं। पंडे–पुजारी, ज्योतिषी–साधुओं भिखमंगों से लेकर डोमों तक की बड़ी आबादी अपने–अपने पेशों में लगी हैं।

बनारसी साड़ी सारी दुनिया में एक ब्रांड के रूप में मशहूर है, लेकिन साड़ी के साथ–साथ कपड़ा बुनने का बड़ा कारोबार बनारस में मौजूद है। बुनने से बेचने के बीच अनेक तरह के कार्य होते हैं जिन्हें लोग पीढ़ी दर पीढ़ी सम्पादित करते हैं। बुनाई, रंगाई, धुलाई से लेकर माल को बाजार पहुँचाने तक अनेक तरह के कार्य होते हैं।

लकड़ी और मिट्टी के खिलौने बनाने वाले बढ़ई, कुम्हार, लुहार से लेकर इमारतें बनाने वाले कारीगर भी पीढ़ी दर पीढ़ी काम कर रहे हैं। कांसे के बर्तन बनाने वाले (कसेरे), वरक बनाने वाले, जरीकारी करने वाले, जिल्द मढ़ने वाले मोती–मनके (बीड्स) बनाने वाले, गिरे हुए पत्ते बीनकर दोने और पत्तलें बनाने वाले, बांस की डलिया–बेना–मौनी बनाने वाले, गद्दे बनाने वाले,

मिठाई और नमकीन बनाने वाले, मिश्री, बताशे और नानखटाई बनाने वाले, नाई, दर्जी, धोबी, भंगी–मेहतर जाने कितने प्रकार के शिल्पी और श्रमजीवी बनारस में सदियों से खटते–खपते हुए अपनी और समूचे समाज की जीवन–नैया खेते आ रहे हैं। इनमें से अनेक पेशे श्रम की प्रक्रिया के ही भीतर शिल्प और कला के रूप में विकसित हुए।

एक जमाना था जब बनारस की सड़कों पर इक्के और तांगे दौड़ते रहते थे। गोदौलिया स्थित तांगा स्टैण्ड ही नहीं, कभी–कभी दिख जाने वाले इक्के दुक्के तांगे अभी भी इसकी याद दिलाते है। कभी उनके बीच 'गहरेबाजी' की प्रतिस्पर्धाएं भी होती थीं। बनारस का पान मशहूर है, उसी से यहाँ का 'पान दरीबा' आबाद है। पान उगाने वालों से लेकर पान देखने खरीदने खाने वालों तक बहुत बड़ा समुदाय इससे जुड़ा है। पान के साथ वरक, जर्दा का भी पहलू जुड़ा है। इत्र और गंध द्रव्यों के व्यवसाय में जाने कितने परिवार जाने कितने लंबे समय से लगे हैं। इन सभी व्यवसायों का देशी ज्ञान उनकी अपनी भाषा के शब्दों में सुरक्षित है।

इन सभी पेशों से जुड़े लोगों की भाषा में पेशे से जुड़ी तकनीकी शब्दावली का भारी मात्रा में उपयोग होता रहा है। यह शब्दावली बेहद समृद्ध और उतनी ही दिलचस्प है। विगत दो तीन दशकों में हुए तकनीकी विकास से सभी परम्परागत पेशों की प्रकृति में बदलाव हुआ है और उसी अनुरूप पुरानी शब्दावली छूट रही है और उसकी जगह नयी शब्दावली विकसित हो रही है। इन पेशों से जुड़े लोग जो सत्तर अस्सी वर्ष की आयु के हैं उनके पास यह परम्परागत शब्द सम्पदा मौजूद है। आशंका है कि इस पीढ़ी के साथ ही उन शब्दों का विशाल भण्डार लुप्त हो जायेगा। पनसुई, गलता, मथेला, गौखा, रहतिया, तुरुपना, बहिरा अलंग, साफा–पानी का संदर्भ और गूढ़ार्थ खोजने से भी नहीं मिलेगा।

इस परियोजना के माध्यम से हम बनारस की पेशेगत शब्दावली का अध्ययन और संकलन करना चाहते हैं। परियोजना के दो चरण होंगे। पहले चरण में हम विभिन्न पेशों से जुड़े सत्तर–अस्सी वर्ष के लोगों को चिन्हित करके उनसे विस्तृत बातचीत करेंगे। बातचीत में उनके पेशे से जुड़ी विभिन्न क्रियाओं, उपयोग में आने वाले औजारों के साथ–साथ उनके जीवनानुभव के बारे में बातचीत की जायेगी।

परियोजना के दूसरे चरण में इस बातचीत का संदर्भण तथा उसके आधार पर पेशागत आकर शब्दों का अध्ययन एवं संकलन किया जायेगा।

हजारो वर्षों से जो पेशे बनारस को दुनिया के बाकी शहरों से अलग और विशिष्ट बनाते हैं उनकी शब्द सम्पदा क्रिया बहुलता आदि के अध्ययन से बनारस की जीवन्तता और वैशिष्टय की पहचान करने में सफलता मिलेगी। साथ ही उनके सदर्भण से भावी पीढ़ियों को बनारस के इस विशिष्ट पहलू से परिचित भी कराया जा सकेगा। अनुभव से देखा गया है कि सीधे जमीन से आये हुए शब्द जिन अर्थों को व्यक्त करते हैं उनकी अभिव्यक्ति के लिए कई बार हिंदी और अंग्रेजी जैसी मानक भाषाओं में शब्द नहीं मिलते। इस दृष्टि में देखें तो इस परियोजना के द्वारा हम अनूठे शब्दों का संग्रह करने में सफल होंगे जिनसे हिंदी का शब्द भंडार समृद्ध होगा।

6. टीम की विशेषज्ञता और अनुभव :सामान्य विवरण–

इस परियोजना में भोजपुरी अध्ययन केन्द्र को शामिल किया गया है। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का भोजपुरी अध्ययन केन्द्र भोजपुरी भाषा और साहित्य के अध्ययन और विकास के लिए विगत पाँच–छह वर्षों से कार्य कर रहा है। भोजपुरी क्षेत्र के कबीर सहित तमाम संतो की वाणी श्रमशील जनता के हृदय की आवाज है। भोजपुरी का प्रभाव यदि दुनिया के विभिन्न देशों में दिखाई पड़ता है तो उसके पीछे भोजपुरी क्षेत्र का श्रमिक वर्ग है जिसने अपनी मेहनत के बल बूते मिट्टी को सोना बनाने का काम किया है। भोजपुरी की प्रतिष्ठा दरअस्ल इसी श्रमशक्ति की

प्रतिष्ठा है। 1857 में औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध सबसे पुरजोर प्रतिरोध भोजपुरी क्षेत्र के महानायक वीर कुंवर सिंह ने किया। इस रूप में देखें तो भोजपुरी श्रम और शौर्य की भाषा है। भोजपुरी लोक गीत जीवन की दैनन्दिन गतिविधियों के उत्सव के गीत हैं तो भोजपुरी लोक कथाओं में विपरीत परिस्थितियों से संघर्ष की अनेक धैर्य गाथाएँ मौजूद हैं। श्रम और शौर्य के साथ जीवन के विविध राग, आनन्द, उल्लास, प्रेम, विरह, करुण, और रौद्र सभी मौजूद हैं। भोजपुरी अध्ययन केन्द्र भोजपुरी भाषा की बहुवर्णी छवियों को देखने परखने और जानने को सार्थक उपक्रम में लगा है। भाषा और साहित्य के साथ–साथ भोजपुरी की अत्यन्त मूल्यवान सांस्कृतिक विरासत भी है। भोजपुरी अध्ययन केन्द्र इस सांस्कृतिक विरासत के अध्ययन मूल्यांकन प्रचार प्रसार एवं उन्नयन के लिए विगत 5–6 वर्ष से सन्नद्ध है। इस परियोजना का उद्देश्य भोजपुरी क्षेत्र के हृदय प्रदेश बनारस की श्रमशील और देशज कौशल की शब्दावली का अध्ययन है। इसके लिए भोजपुरी अध्ययन केन्द्र पूर्णतया समर्थ है।

7. परियोजना की उपलब्धि–

1. बनारस के परम्परागत पेशों से जुड़ी शब्दावली का हिन्दी–भोजपुरी शब्द कोश निर्माण।(पुस्तक के रूप)
2. आलेखन : साक्षात्कारों के आधार पर सभी विलुप्त हो रहे परम्परागत पेशों का व्योरेवार विवरण। (पुस्तक के रूप)

8. समय सीमा/ माइल स्टोन–

1. साहित्य सर्वेक्षण पहले चरण में परम्परागत पेशों से सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण करके समूची शोध परियोजना के लिए उपलब्ध सामग्री का संचयन। यह परियोजना पहले महनीने में पूरा हो जायेगा।
2. क्षेत्र सर्वेक्षण : बनारस के विभिन्न परम्परागत पेशों की [illegible] का परिचय प्राप्त करते हुए इस पेशे स जुड़े 70–80 वर्ष के लोगों को चि[illegible]
3. साक्षात्कार : साक्षात्कार के लिए विशेषज्ञों की मदद से प्रश्नावली का निर्माण तथा इस[illegible] आधार पर चिन्हित लोगों के विस्तृत साक्षात्कार।
4. साक्षात्कार के आधार पर परियोजना का लेखन
5. छायांकन एवं संपादन

प्रथम वर्ष के प्रयास से परम्परागत पेशों पर आधारित एक पुस्तक का प्रकाशन सम्भव हो सकेगा। इसी बीच ज्यादा से ज्यादा शिल्पियों/पेशागत श्रमिकों का साक्षात्कार, छायांकन एवं विडियोग्राफी भी कर लिया जायेगा। द्वितीय वर्ष में विशेषज्ञों के सलाह के अनुरूप अपेक्षित सुधार के उपरान्त डाक्यूमेन्ट्री का निर्माण।

दिनांक: 20 जनवरी 2016
स्थान : आईआईटी (बीएचयू) वाराणसी

प्रधान अनुसंधान कर्त्ता

डॉ0 प्रभाकर सिंह
प्रोफेसर, भौतिकी विभाग
भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान
(काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी– 221005)
Mob. No. 9451002283
Ph.No. 0542-6701916
Email : psingh.app@iitbhu.ac.in
Psingh.app@gmail.com

सह अनुसंधान कर्त्ता

प्रो0 सदानन्द शाही
समन्वयक
भोजपुरी अध्ययन केन्द्र, कला संकाय
बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी – 221005
Mob. No. 09450091420
Ph.No. 0542-6703020
Email : sadanandshahi@gmail.com
bhojpuri.ak.bhu@gmail.com

Forwarded

HEAD/विभागाध्यक्ष
भौतिकी विभाग/Deptt. of Physics
भा०प्रौ०सं०/(का०हि०वि०)/IIT (BHU)
वाराणसी/Varanasi-221005

नोट: परियोजना के उद्देश्य को मूर्त रूप देने के लिए अधोलिखित विशेषज्ञों की कोर टीम कार्य करेगी।

1. पं0. हरिराम द्विवेदी, भोजपुरी साहित्यकार, वाराणसी
2. प्रो0 एस.एन. उपाध्याय, पूर्व निदेशक, आई.टी., बीएचयू, वाराणसी
3. प्रो0 अवधेश प्रधान, सह–समन्वयक, भोजपुरी अध्ययन केन्द्र, बी.एच.यू.
4. प्रो0 प्रदीप कुमार मिश्र, रसायन अभियान्त्रिकी विभाग, आई.आई. टी. (बी.एच.यू.)
5. श्री प्रकाश उदय, भोजपुरी साहित्यकार, वाराणसी
6. डॉ0 बलभद्र सिंह, हिन्दी और भोजपुरी के कवि आलोचक, वारणसी
7. डॉ0 अवधेश दीक्षित, पोस्ट डॉक्टोरल फेलो, भोजपुरी अध्ययन केन्द्र, बी.एच.यू.
8. डॉ0 शैलेन्द्र कुमार सिंह, पोस्ट डॉक्टोरल फेलो, भोजपुरी अध्ययन केन्द्र, बी.एच.यू.